नए नियम में राज्य और वाचा

अध्याय 3

नई वाचा

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
राज्य का प्रशासन....1
वाचा के प्रतिनिधि....3
पुराना नियम....3
नई वाचा....4
उपयुक्त नीतियाँ....4
पुराना नियम....4
नई वाचा....5
जैविक विकास....7
पुराना नियम....7
नई वाचा....8
पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता....10
दिव्य परोपकारिता....11
पुराना नियम....11
नई वाचा....12
निष्ठा की जाँचें....14
पुराना नियम....15
नई वाचा....16
परिणाम....18
पुराना नियम....18
नई वाचा....19
उपसंहार....21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नए नियम में राज्य और वाचा

अध्याय तीन

नई वाचा

परिचय

क्या आपने कभी ध्यान दिया कि कैसे मसीह के अनुयायी बहुत सी परिचित अभिव्यक्तियों को विभिन्न तरीकों से उपयोग करते हैं? यही विषयकर निश्चित रूप से "नई वाचा" जैसे शब्दों के साथ है। हम जब कभी भी प्रभु भोज को लेते हैं तो यीशु ने जो कहा कि—"यह नई वाचा का प्याला है" – का स्मरण करते हैं। और पूरे संसार में, स्थानीय कलीसियाएँ के नामों में "नई वाचा" के शब्द सम्मिलित हैं। परन्तु यदि आप अधिकांश मसीही विश्वासियों को पूछें कि, "नई वाचा क्या है?" तो आप जितने लोगों से पूछेंगे उतने ही उत्तरों को प्राप्त करेंगे। कभी कभी इस तरह की भिन्नतायें कोई ज्यादा अर्थ नहीं रखती हैं। परन्तु जैसा कि आप इस अध्याय में देखेंगे, कि नई वाचा की अवधारणा ने नए नियम के लेखकों को इतना ज्यादा प्रभावित किया है कि हम उनके धर्मविज्ञान को ही "नई वाचा का धर्मविज्ञान" कह कर पुकारते हैं। और इस अध्याय में, हमें उन सभी कार्यों को करने की आवश्यकता है, जिससे हम यह समझ सकें कि नई वाचा क्या है।

यह नए नियम में राज्य और वाचा की हमारी श्रृंखला के ऊपर हमारा तीसरा अध्याय है। हमने इस तीसरे अध्याय का शीर्षक "नई वाचा" के नाम से दिया। और इस अध्याय में हम इस बात का पता लगाएंगे कि कैसे नए नियम के लेखक नई वाचा की अवधारणा के ऊपर निर्भर हुए जिससे कि वे अपने कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को आकार दे सकें।

हमारा अध्याय दो मुख्य हिस्सों में विभाजित होगा। सर्वप्रथम, हम यह देखेंगे कि कैसे नई वाचा परमेश्वर के राज्य के प्रशासन की विशेषता को बताती है। दूसरा, हम यह पता लगाएंगे कि कैसे नई वाचा परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य हुए पारस्परिक व्यवहार की निश्चित गतिशीलता को प्रकाशित करती है। आइए सर्वप्रथम हम नई वाचा के माध्यम से परमेश्वर के राज्य के प्रशासन को देखें।

राज्य का प्रशासन

जिस इब्रानी शब्द का हम सामान्यतया "वाचा" के लिए अनुवाद करते हैं वह "बिरीथ" है। पुराने नियम के यूनानी अनुवाद, सेप्तुआजिन्त में, इस इब्रानी शब्द को "डियाथिखे" अनुवाद किया है। "डियाथिखे" नए नियम में "वाचा" के लिए भी प्रगट होता है। दोनों बिरीथ और डियाथिखे शब्दों में "एक गंभीर समझौते या संधि" के संकेत की सूचना मिलती है। बाइबल में, हम साथियों के मध्य में वाचाओं को बनते हुए देखते हैं। हम वाचाओं को राजाओं और उनके नागरिकों के मध्य, राजाओं और अन्य राजाओं के मध्य में भी बनते हुए देखते हैं। और परमेश्वर ने राष्ट्रों और लोगों के साथ वाचाओं को बाँधा। इस अध्याय में, हम विशेष रूप से परमेश्वर के द्वारा लोगों के साथ बाँधी गई वाचा में, विशेषकर मसीह में उसकी नई वाचा में रूचि रखते हैं।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर की बाइबल आधारित वाचाओं के प्रति हमारी समझ के लिए सबसे उल्लेखनीय सफलताओं में से एक बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में घटित हुई। उस समय पर, कई विद्वानों ने बाइबल आधारित वाचाओं को प्राचीन निकट पूर्व दस्तावेजों के समूह के साथ तुलना करनी आरम्भ कर दी थी जिसे हम अक्सर "अधिपति-जागीरदार सन्धियाँ" के नाम से पुकारते हैं। ये दस्तावेज पुराने नियम के समयों में राष्ट्रों के मध्य विश्वव्यापी सन्धियाँ थीं। इन सन्धियों में, अधिपति, या प्रसिद्ध

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राजा, उनके जागीरदारों के साथ, या छोटे राजाओं को अपनी अधीनता में रखते हुए अपने राज्यों के प्रशासन का प्रबन्ध किया करते थे। जैसा कि हम देखेंगे, बाइबल आधारित वाचाओं और इन अधिपति-जागीरदार सन्धियों के मध्य में समानतायें यह स्पष्ट कर देती हैं कि पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की वाचायें उसके राज्य के कार्यों के प्रशासन के प्रबन्ध के लिए प्राथमिक तरीका था।

> हम पुराने नियम में देखते हैं, विशेषकर पवित्रशास्त्र में उत्पत्ति की पुस्तक में दो भिन्न तरह की सन्धियों को प्रदर्शित किया गया है। सर्वप्रथम, जिसे हम "समानता वाली सन्धि" के नाम से पुकारते हैं, को देखते हैं, जो कि दो बराबर की योग्यताऐं, बराबर के अधिकारों को रखने वाले लोगों के मध्य में बाँधी जाती है, जिसमें वे एक ऐसा समझौता करते हैं जो कि दोनों के लिए सहमति से लाभकारी होता है। उदाहरण के लिए अब्राहम और अबीमेलेक को लीजिए...दूसरी तरह की सन्धि वह है जिसमें वास्तव में हम जिसे प्राचीन निकट पूर्वी लोग "अधिपति-जागीरदार सन्धि" के नाम से पुकारते हैं, को देखते हैं, और यह अक्सर असमान शक्तियों के मध्य में होती थी, जिसमें एक शक्तिशाली और मजबूत होता था, जिसने लगभग आपके ऊपर पहले से ही विजय प्राप्त कर ली हो और आपको जीत लिया हो और अब वह आपके साथ सम्बन्धों में होना चाहता है जिसमें मजबूत व्यक्ति, जो कि अधिपति है, अपने जागीरदार से सभी तरह के लाभों को प्राप्त करता है। इसलिए, अक्सर इसमें जागीरदार की तरफ से निष्ठा की मांग की जाती है ताकि वह उसके अधिपति के प्रति अपनी निष्ठा में बना रहे...परन्तु यहाँ पर अधिपति के लिए लाभ है और वह यह है कि जागीरदार उसके बचाव में उसके लिए आ जाएगा जब कभी भी कोई विजयी सेना या आक्रमण करने वाली सेना उसके सामने उस पर आक्रमण करने के लिए आ जाती है, और उनमें इस तरह की आपसी सहमति से सुरक्षा के सम्बन्ध में भी थी।
>
> — डॉ. डानिय्येल ऐल. किम

> आप जानते हैं कि, हम राजाओं के संदर्भों में अक्सर यह सोचते हैं कि वे अत्याचारी और धनी स्वामियों की तरह थे जो कि उनके नागरिकों का शोषण करते थे। परन्तु वास्तव में, यीशु और उससे पहले के समय में प्राचीन निकट पूर्व के संदर्भ में राजपद व्यापक रूप से वाचा की अवधारणा के ऊपर आधारित था। इसलिए हमारे पास सन्धियों के, प्राचीन सन्धियों के प्रमाण हैं, जिसमें एक राजा, या एक स्वामी, और जिसे हम अधिपति कह कर पुकार रहे हैं कुछ लोगों के साथ एक समझौते में प्रवेश करता था जो आवश्यक रूप से उसके दास या उसके जागीरदार बन जाते थे और वे सम्बन्धों को परिभाषित करते थे जैसे कि स्वामी, अधिपति ऐसे कानूनों की सूची को परिभाषा देता था जिससे एक सम्बन्ध को संभाल कर रखा जा सकता था, और वह कुछ ऐसा कहता था कि: "मैं तुझे सुरक्षा का प्रस्ताव देता हूँ, मैं तुझे सम्पन्नता का प्रस्ताव देता हूँ, मैं तुझे मेरे साथ सम्मिलित होने के कारण कि तू अपनी फसल को मेरे साथ साझा करे, अपनी निष्ठा मुझे देने के कारण, और अन्य राजाओं और स्वामियों के साथ निष्ठा को साझा न करने के कारण, तेरी पहचान का प्रस्ताव देता हूँ। और इस तरह से एक अर्थ में यह एक सहमति से बनाई हुई परिस्थिति की ओर अग्रसर करता था। और यदि हम राजपद के बारे में और वाचा को इस तरह के एक समझौते के शब्दों में सोचना आरम्भ करें, तब हम जो पाते हैं वह यह है कि पुराने नियम के बहुत से

> भिन्न हिस्से ऐसे जान पड़ते हैं कि इन अधिपतियों की सन्धियों के सटीक तत्वों के बहुत अधिक अनुरूप लगते हैं।
>
> — श्रीमान् ब्राडले टी. जॉनसन

हम परमेश्वर के राज्य के प्रशासन को तीन मुख्य तरीकों से देखेंगे। सर्वप्रथम, हम वाचा के प्रतिनिधियों की विशेषता के ऊपर ध्यान देंगे। दूसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे परमेश्वर ने परमेश्वर के राज्य के लिए उपयुक्त नीतियों के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया। और तीसरा, हम यह संकेत करेंगे कि कैसे परमेश्वर उसके राज्य के प्रशासन का प्रबन्ध उसकी वाचा की नीतियों के द्वारा जैविक अर्थात सचेत विकास के माध्यम से करता है। आइये सबसे पहले परमेश्वर की वाचा के प्रतिनिधियों की ओर देखें।

वाचा के प्रतिनिधि

जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, प्राचीन अधिपति अपने राज्यों के प्रशासन को निम्नस्तरीय राजाओं या जागीरदारों के साथ सन्धियाँ स्थापित करने के द्वारा करते थे। उनके अधीनस्थ राजा उनके राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते थे और उनके राज्यों के प्रशासन का प्रबन्ध स्वयं को अपने अधिपति के अधीन रहते हुए करते थे। इसी तरह से, परमेश्वर उसके राज्य के प्रशासन को उन मनुष्यों के द्वारा वाचाओं को बाँधने के द्वारा करता था जिन्हें वह उसके वाचा के लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनता था।

हमारे कहने का क्या अर्थ है, इसे देखने के लिए, हम सर्वप्रथम यह देखेंगे कि कैसे परमेश्वर ने पुराने नियम में वाचा के प्रतिनिधियों को चुना। और तब हम नई वाचा को देखेंगे। आइए पुराने नियम के साथ आरम्भ करें।

पुराना नियम

यह देखने में कठिनाई नहीं है कि परमेश्वर पुराने नियम के समय में वाचा के प्रतिनिधियों को चुना था। उत्पत्ति 1-3 और होशे 6:7 दोनों इंगित करते हैं कि परमेश्वर ने पहली बाइबल आधारित वाचा को आदम के साथ बाँधा था। उत्पत्ति 6:18 और उत्पत्ति 9:9-17 परमेश्वर की नूह के साथ बाँधी हुई वाचा की ओर संकेत देते हैं। और उत्पत्ति 15-17 में, परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा को बाँधा। निर्गमन 19-24 इंगित करता है कि परमेश्वर ने मूसा को उसकी वाचा के प्रतिनिधि के रूप में चुना। और अन्त में, भजन संहिता 89 और 132 जैसे प्रसंग दाऊद के साथ बाँधी गई परमेश्वर की वाचा की ओर संकेत करते हैं।

परमेश्वर ने इनमें से प्रत्येक व्यक्ति के साथ भिन्न तरीके से व्यवहार किया जब उसने उनके साथ वाचा को बाँधा। परन्तु उन सभों ने अन्य लोगों को परमेश्वर के सामने परमेश्वर के स्वर्गीय राजकीय दरबार के न्याय के आगे प्रस्तुत किया। आदम और नूह के साथ बाँधी गई वाचाओं को "विश्वव्यापी वाचायें" कह कर पुकारा जा सकता है क्योंकि आदम और नूह सभी मानव प्राणियों को परमेश्वर की वाचा के लोगों के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ बाँधी गई वाचाओं को "राष्ट्रीय वाचायें" कह कर पुकारा जा सकता है। इन वाचाओं में, इन व्यक्तियों ने इस्राएल के राष्ट्र को और अन्यजातियों को वाचा के लोगों के रूप में इस्राएल में अपनाए जाने के लिए प्रस्तुत किया है।

पुराने नियम की वाचा के प्रतिनिधियों को ध्यान में रखते हुए, आइए हम यह देखें कि कैसे परमेश्वर ने नई वाचा को वाचा के एक प्रतिनिधि के द्वारा प्रशासित करता है।

नई वाचा

नया नियम निरन्तर मसीह को नई वाचा के प्रतिनिधि के रूप में परिचित करता है। परमेश्वर ने उसे उसकी कलीसिया के लिए स्वयं के बदले में उपयोग किया—जिस कारण प्रत्येक यहूदी और अन्यजाति की पहचान परमेश्वर मसीह के साथ करता है। जैसा कि हम इब्रानियों 9:15 में पढ़ते हैं कि:

> यीशु नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें (इब्रानियों 9:15)।

इस जैसी ही शिक्षा रोमियों 8:34 और 1 तीमुथियुस 2:5-6 जैसे प्रसंगों में भी दिखाई देती है।

तथ्य यह है कि मसीह परमेश्वर की वाचा का चुना हुआ प्रतिनिधि है क्योंकि कलीसिया हमें नए नियम के धर्मविज्ञान के महत्वपूर्ण गुणों में से एक को समझने में सहायता प्रदान करती है। जैसा कि बहुत से बाइबल के व्याख्याकारों ने उल्लेख किया है कि नए नियम का धर्मविज्ञान "ख्रीष्टकेन्द्रित" है। दूसरे शब्दों में, नए नियम के धर्मविज्ञान का प्रत्येक पहलू बड़ी निकटता के साथ मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के साथ बँधा हुआ है। परन्तु ऐसा सत्य क्यों है? उदाहरण के लिए, क्यों नया नियम यह शिक्षा देता है कि हमें उद्धार के लिए यीशु में ही विश्वास करना चाहिए? क्यों यीशु के नाम में प्रार्थना करना और दया दिखानी चाहिए? क्यों कलीसिया को "मसीह की देह" कह कर पुकारा गया है? उत्तर स्पष्ट है। मसीह इस केन्द्रीय भूमिका को नए नियम के धर्मविज्ञान में निभाता है क्योंकि परमेश्वर ने नई वाचा में जीवन के प्रत्येक आयाम का प्रशासन कलीसिया के लिए उसके प्रतिनिधि के रूप में मसीह के माध्यम से किया है। नए नियम के धर्मविज्ञान के इस गुण को अनदेखा करना इसके महत्वपूर्ण गुणों में से एक को खो देने जैसा होगा।

यह देख लेने के बाद कि परमेश्वर उसके राज्य को वाचा के प्रतिनिधियों के द्वारा प्रशासित करता है, और विशेषकर नई वाचा में मसीह के द्वारा, हमें अब परमेश्वर के राज्य के दूसरे गुण की ओर मुड़ना चाहिए: जो वे उपयुक्त नीतियाँ हैं जिन्हें बाइबल आधारित वाचाओं ने बाइबल के इतिहास में विभिन्न अवधियों में स्थापित किया है।

उपयुक्त नीतियाँ

सभी प्राचीन निकट पूर्वी अधिपति-जागीरदार सन्धियों में बहुत से तत्व एक जैसे थे, परन्तु साथ ही वह कई तरीकों से भिन्न भी थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि प्रत्येक व्यक्तिगत् सन्धि विशिष्ठ विषय को सम्बोधित करती थी, जो कि प्रत्येक अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए प्रासंगिक थे। बहुत कुछ उसी तरह से, परमेश्वर की सारी वाचाओं में बहुत कुछ सदृश्य था, परन्तु प्रत्येक वाचा की नीतियाँ विशिष्ठ विषयों को सम्बोधित करने के लिए रूपरेखित की गई थी जो की बाइबल के इतिहास में विभिन्न अवस्थाओं में महत्वपूर्ण थे।

यह देखने के लिए कैसे परमेश्वर की वाचा की नीतियाँ विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में उपयुक्त थीं, हम एक बार फिर से पुराने नियम की वाचाओं की ओर देखेंगे, और तब हम नई वाचा की नीतियों की ओर देखेंगे। आइए, सर्वप्रथम हम पुराने नियम की वाचाओं की नीतियों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करें।

पुराना नियम

पुराने नियम की वाचाओं की शर्तों को सरसरी दृष्टि से पढ़ना उन नीतियों के ऊपर ध्यान को केन्द्रित करती हैं जो कि परमेश्वर के राज्य में विशेष अवस्थाओं में प्रासंगिक थे।

परमेश्वर की आदम के साथ बाँधी गई वाचा को "वाचा का आधार" कह कर पुकारा जा सकता है। यह परमेश्वर के राज्य के लक्ष्यों के ऊपर और उसके राज्य में पाप के संसार में आने से पहले और बाद के मानव प्राणियों की भूमिका के ऊपर जोर देती है।

बाढ़ के आने के बाद, परमेश्वर ने नूह के साथ एक वाचा को स्थापित किया जिसे "स्थिरता की वाचा" कह कर पुकारा जा सकता है। इस वाचा ने प्रकृति की स्थिरता के ऊपर ध्यान को एक ऐसे सुरक्षित वातावरण की प्राप्ति के साथ केन्द्रित किया जिसमें रहते हुए भी पापपूर्ण मानवता परमेश्वर के राज्य के प्रयोजनों की सेवा कर सकती थी।

हम अब्राहम की वाचा को "इस्राएल के चुनाव की वाचा" के रूप में उल्लेख कर सकते हैं। इसने इस्राएल को परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में उसके विशेषाधिकारों और जिम्मेदारियों के ऊपर ध्यान केंद्रित किया।

मूसा के साथ बाँधी गई वाचा को अक्सर "व्यवस्था की वाचा" कह कर पुकारा जाता है क्योंकि इसने परमेश्वर की व्यवस्था के ऊपर ध्यान को केन्द्रित किया जब उसने इस्राएल के गोत्रों को एक कौम अर्थात् राष्ट्र के रूप में एकीकृत किया। इस वाचा के साथ, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को उनकी प्रतिज्ञात् मातृभूमि की ओर नेतृत्व किया।

और अन्त में, हम दाऊद की वाचा को "राजवंशीय वाचा" कह कर पुकार सकते हैं। इस वाचा ने इस्राएल को एक प्रामाणिक राज्य के रूप में स्थापित किया और इस बात पर जोर दिया कि कैसे दाऊद का राजकीय राजवंश इस्राएल को राज्य की सेवकाई में नेतृत्व प्रदान करेगा।

जब हम पुराने नियम की वाचाओं के द्वारा उपयुक्त नीतियों के स्थापित होने के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो हमें इस बात के पता चलने पर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि नई वाचा ने भी राज्य की उन नीतियों को स्थापित किया जो कि नई वाचा के युग के लिए उपयुक्त थी।

नई वाचा

नई वाचा बाइबल के इतिहास में—परमेश्वर के द्वारा आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद की वाचाओं के बाद अन्तिम अवधि में आता है। और इसी कारण से, नई वाचा को "परिपूर्णता की वाचा" के रूप में व्याख्या किया जा सकता है। इस प्रकार, इसने ऐसी नीतियों को जो अतीत की विफलताओं को पलटने और मसीह में परमेश्वर के राज्य के प्रयोजनों को पूर्ण या पूरा करने के लिए निर्मित की गई थी, को स्थापित किया।

पवित्रशास्त्र में नई वाचा का उल्लेख पहली बार यिर्मयाह 31:31 में आया है, जहाँ पर हम इन निम्न शब्दों को पढ़ते हैं:

> सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं, यहोवा की वाणी है, जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूँगा (यिर्मयाह 31:31)।

इस आयत के विस्तृत संदर्भ में, "ऐसे दिन आने वाले हैं," वाक्य का संकेत इस्राएल के निर्वासन के बाद के समय की ओर है। जैसा कि हमने पहले अध्याय में देखा, मसीही शुभ-समाचार का सन्देश—या "सुसमाचार"—यह था कि परमेश्वर का राज्य इस्राएल के निर्वासन के समाप्त होने के बाद इसकी अन्तिम, विश्वव्यापी विजय तक पहुँच जाएगा। इसलिए, नई वाचा के प्रथम उल्लेख से लेकर, हम इसका सम्बन्ध परमेश्वर के राज्य की विभिन्न परिपूर्णताओं तक देखते हैं।

इसी कारण से, यिर्मयाह 31:33-34 में परमेश्वर ने नई वाचा की नीतियों को उजागर किया है, ऐसी नीतियाँ जो कि मसीह के राज्य की अन्तिम अवस्था के लिए उपयुक्त थी। सुनिए वहाँ पर परमेश्वर ने क्या कहा है:

> जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बाँधूँगा, वह यह है… मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे। तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह

नहीं कहना पड़ेगा कि, "यहोवा को जानो," क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे... क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा (यिर्मयाह 31:33-34)।

इस प्रसंग में ध्यान दें कि नई वाचा परमेश्वर के राज्य का अन्ततः पूर्ण अन्त ले आएगी "जब "[परमेश्वर] उनके "[उसके लोगों के] अधर्म को क्षमा करेगा और उनके पाप को फिर स्मरण न करेगा।" परमेश्वर के लोगों के लिए इस अन्तिम अनन्तकाल की आशीषों के समय, [वह] अपनी व्यवस्था [उनके] मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा।" वास्तव में, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह इसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए की नई वाचा में सत्य करेगा। इसलिए ही वह ऐसा कहता है कि, "छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।"

अब व्यवस्थाविवरण 10:16 और यिर्मयाह 4:4 जैसे प्रसंगों में, परमेश्वर ने निरन्तर इस्राएल के राष्ट्र को उसकी वाचा के साथ बाहरी तौर पर सम्बद्ध होने से परे आगे की ओर बढ़ने और उनके हृदयों को खतना करने के लिए बुलाहट दी। दूसरे शब्दों में, उन्हें उसे उनके हृदयों पर व्यवस्था को लिखने के द्वारा गहराई से प्रेम करना था। परन्तु नई वाचा के युग की नीतियों में, परमेश्वर ने इस तरह से हस्तक्षेप करने की प्रतिज्ञा की कि यह उसकी वाचा के सभी लोगों के लिए वास्तविकता बन जाएगी।

यीशु का पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के बाद, परमेश्वर के राज्य का आकार उसी तरह का बना रहा जिसमें परमेश्वर उसके लोगों के ऊपर उनके स्थान पर ही शासन करता है, परन्तु इसके जैसा यह दिखाई देता उसमें पूरी तरह परिर्वतन हो गया। यीशु का परमेश्वर के दाहिने हाथ में विराजमान होने की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि—जैसा कि प्रेरित पतरस ने प्रेरितों के काम अध्याय 2 में पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार किया—उसने अपने पवित्रआत्मा को जैसा कि योएल की पुस्तक में भविष्यद्वाणी की गई थी, उसके लोगों के ऊपर उण्डेल दिया था। और यहूदियों में उसके आत्मा का वास करना, और—उनके आश्चर्य के लिए और, यह एक तरह से सदमे के समान था—अन्यजातियों के लिए भी, यह संकेत था कि परमेश्वर का राज्य अब और ज्यादा इस्राएल के लोगों के द्वारा ही निर्मित नहीं होगा, जो कि अब्राहम के मानवीय वंशज् थे,अपितु उनके द्वारा जो विश्वास के माध्यम से अब्राहम के वंशज् थे, जैसा कि प्रेरित पौलुस रोमियों 4 में कहता है। इस तरह से, परमेश्वर का राज्य हरेक कुल, राष्ट्र और भाषा से मिलकर निर्मित हुआ है; अर्थात् जो कोई मसीह में विश्वास करके आत्मा को प्राप्त करता है, और जिस किसी के पास आत्मा है उसमें परमेश्वर वास कर रहा है और उनके जीवनों के ऊपर शासन कर रहा है।

— डॉ. कॉन्सटैन्टाईन आर. कैंपबेल

जैसा कि हमने हमारे पहले के अध्याय में देखा, यीशु ने शिक्षा दी कि नई वाचा का युग तीन अवस्थाओं में समय के साथ खुलता चला जाएगा। सर्वप्रथम, इसका उदघाटन यीशु के पहले आगमन के साथ होगा। इस अवस्था में, मसीह ने बहुत सी, परन्तु नई वाचा की सारी अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं किया। तब, निरन्तरता में, नई वाचा का युग एक अनिश्चित अवधि के लिए कलीसिया के इतिहास के द्वारा बना रहेगा। इस अवस्था में, यीशु और अधिक, परन्तु फिर भी नई वाचा की सारी अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं करता है। और अन्त में, नई वाचा का युग मसीह के दूसरे आगमन के साथ ही इसके शिरो-बिन्दु अर्थात् पराकाष्ठा तक पहुँच जाएगा जब प्रत्येक अपेक्षा पूर्ण रूप से पूरी कर दी जाएगी।

नई वाचा की त्रि-स्तरीय पूर्णतायें नए नियम के धर्मविज्ञान के एक दूसरी मूलभूत विशेषता को पहचानने में सहायता करती हैं। यह न केवल ख्रिष्टक्रेन्द्रित था। अपितु नए नियम का धर्मविज्ञान साथ ही नई वाचा की नीतियों की व्याख्या करने के लिए जैसे जैसे यह इन तीनों अवस्थाओं में खुलता जाता है वैसे ही यह समर्पित भी था।

वस्तुत: नए नियम के लेखकों को उनके बहुत से समय को नई वाचा में जीवन की अपेक्षाओं को समायोजन करने में खर्च किया। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 31 के द्वारा निर्मित की गई अपेक्षाओं के विपरीत, मत्ती 6:12 और 1 यूहन्ना 1:9 जैसे प्रसंग व्याख्या करते हैं कि मसीह के अनुयायियों को फिर भी क्षमा माँगने की आवश्यकता है क्योंकि वे फिर भी परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं। हम 2 कुरिन्थियों 11:13 और गलातियों 2:4 जैसे प्रसंगों में भी देखते हैं कि झूठे विश्वासी सच्चे विश्वासियों के मध्य में नई वाचा की कलीसिया में बने हुए हैं। कैसे ये और अन्य तथ्यों ने नई वाचा की नीतियों को खुलते हुए प्रभावित किया? इस तरीके या अन्य तरीके से, नए नियम के धर्मविज्ञान का प्रत्येक पहलू इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए समर्पित था।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे परमेश्वर ने उसके राज्य को वाचा के प्रतिनिधियों और ऐतिहासिक रूप से उपयुक्त नीतियों के द्वारा प्रशासित किया, हमें बाइबल की वाचाओं की नीतियों के जैविक अर्थात् सचेत विकास का पता लगाना चाहिए।

जैविक विकास

जब हम बात करते हैं कि वाचा की नीतियाँ जैविक रूप से निर्मित होती हैं, तो हमारे मन में एक वृक्ष की वृद्धि जैसी बात होती है। एक वृक्ष उसकी वृद्धि के साथ बीज से पूर्ण परिपक्वता को प्राप्त करते समय परिवर्तित होता है, परन्तु इसमें वही जैविक अवयव रहते हैं। हम पुराने नियम की वाचाओं को कुछ इसी तरह से देख सकते हैं। पुराने नियम की प्रत्येक वाचा में वाचा के भिन्न प्रतिनिधि रहे हैं और उन्होंने उन नीतियों के ऊपर ध्यान दिया है जो कि इतिहास में एक निश्चित समय के लिए उपयुक्त थी। परन्तु एक वृक्ष के समान, उनमें जैविक एकता इन परिवर्तनों के बाद भी बनी रही।

हम परमेश्वर की वाचाओं के जैविक विकास की ओर, सर्वप्रथम पुराने नियम में देखेंगे। तब हम पुराने नियम से नई वाचा की ओर जैविक विकास के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। आइए हम पुराने नियम की वाचाओं के साथ आरम्भ करें।

पुराना नियम

जब हम पुराने नियम की वाचाओं के जैविक विकास को देख सकते हैं जब हम इन बातों को ध्यान में रखते हैं कि कैसे वाचाओं की नीतियाँ पुराने नियम के पूरे इतिहास में निरन्तर कार्यरत् थीं। उदाहरण के लिए, आदम के समय से लेकर, परमेश्वर ने मानव जाति को, उसके स्वरूप में स्थापित किया, जो उसके राज्य को इस पृथ्वी पर विस्तारित करेगा। यह नीति समय के साथ विकसित हुई है, परन्तु इसे पूरी तरह से हटा नहीं दिया गया था।

नूह के समय से लेकर, परमेश्वर ने प्रकृति में स्थिरता परमेश्वर के पतित स्वरूपों को रहने के लिए एक सुरक्षित स्थान के रूप में स्थापित किया जो उसके राज्य के प्रयोजनों की सेवा करेंगे। यह प्रशासित नीति बाद की वाचाओं के साथ विभिन्न तरीकों से परिवर्तित हुई, परन्तु परमेश्वर ने इसे हटा कर एक तरफ नहीं किया।

अब्राहम के समय से लेकर, इस्राएल को विशेष विशेषाधिकार और जिम्मेदारियाँ परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में दी गई थीं। अतिरिक्त वाचाओं के साथ इतिहास में विशेष भूमिका विकसित हुई, परन्तु यह परमेश्वर के राज्य के प्रशासन से कभी भी गायब नहीं हुई।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मूसा के समय से लेकर, व्यवस्था ने इस्राएल के लिए दिशानिर्देशक का कार्य किया। ये व्यवस्था अन्य वाचाओं के आने के साथ भिन्न तरह से लागू की गईं, परन्तु इन्हें कभी भी खत्म नहीं किया गया।

और दाऊद के समय से लेकर, दाऊद के राजकीय राजवंश ने परमेश्वर के लोगों को उसके राज्य की सेवा के लिए नेतृत्व प्रदान किया। यद्यपि यह नेतृत्व नई वाचा और यीशु के राजपद के साथ परिवर्तित हो गया, परन्तु इसे कभी भी एक तरफ नहीं कर दिया गया था।

जैविक विकास के जिस नमूने को हम पुराने नियम में देखते हैं वह मसीह में नई वाचा में निरन्तर चलता रहता है। यह भी पहले की वाचाओं से जैविक रूप में विकसित हुआ है।

नई वाचा

आइए यिर्मयाह 31:31 को फिर से देखें जहाँ परमेश्वर ने ऐसा कहा है कि:

> मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा (यिर्मयाह 31:31)।

अक्सर, मसीही विश्वासियों ने "नई वाचा" की अभिव्यक्ति का यह अर्थ लिया है कि नई वाचा वास्तव में पूरी तरह से नई है, बाइबल की पहले की वाचाओं से असम्बन्धित है। तथापि, यह जानना महत्वपूर्ण है कि, शब्द "नई" का इब्रानी भाषा में शब्द चाडेश से अनुवाद किया गया है। यशायाह 61:4, यहेजकेल 36:26 और अय्यूब 29:20 जैसे प्रसंग स्पष्ट कर देते हैं कि यह शब्द, और इससे सम्बन्धित मौखिक रूपों, का अर्थ "पूरी तरह से नई" से नहीं है। इसकी अपेक्षा, शब्दों का इस परिवार का अर्थ "नवीकरण," "पुन:निर्माण," " जीर्णोद्धारित" या "ताजा निर्मित" किए जाने से है।

यह दृष्टिकोण इस तथ्य के साथ समर्थित है कि परमेश्वर ने कहा कि नई वाचा को "इस्राएल और यहूदा के घरानों" से बाँधा जाएगा। दूसरे शब्दों में, नई वाचा अब्राहम के वंशजों और इस्राएल के निर्वासन की समाप्ति के बाद उसके परिवार में अपनाई गई अन्यजातियों के साथ नवीकृत की हुई राष्ट्रीय वाचा है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि,पुराने नियम की प्रत्येक वाचा की तरह, नई वाचा ने उन नीतियों को स्थापित किया जो इतिहास में उसके स्थान में उपयुक्त थी। ये नई नीतियाँ मसीह और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से प्रकाशित की गई हैं। परन्तु प्रत्येक पुराने नियम की वाचा की तरह, नई वाचा ने उन नीतियों को नवीकृत, पुर्ननिर्मित, जीर्णोद्धारित या ताजा निर्मित किया जिन्हें परमेश्वर पहले की वाचाओं के प्रशासनों में स्थापित किया था।

> जब हम परमेश्वर के राज्य को पवित्रशास्त्र के पूरे मापदण्ड और छुटकारे के पूरे इतिहास में सोचते हैं, तो बाइबल की वाचाओं के ऊपर कार्य करते हुए और मसीह में उनके शिरो-बिन्दु अर्थात् पराकाष्ठा तक पहुँचने में यह पाते हैं कि इसमें परिवर्तन है। इसलिए, उदाहरण के लिए, विशेषकर पुराने नियम में, जब परमेश्वर उसकी उद्धार की योजना को पुरानी वाचा में इस्राएल के राष्ट्र के माध्यम से लेकर आता है, तो वह प्राथमिक रूप से एक राष्ट्र के साथ कार्य कर रहा है, वह प्राथमिक रूप से ईशतंत्र के संदर्भों में कार्य कर रहा है, उस राष्ट्र के एक दृश्य प्रस्तुतीकरण के संदर्भों में जहाँ वह उनके माध्यम से मसीह के आगमन को लेकर आएगा, प्रभु यीशु के आगमन को लेकर आएगा। और आप देखते हैं कि उस राज्य का अधिकांश प्रशासन उनके साथ एक विशेष स्थान, जगह, भूमि, विशेष शासन और सरकार के अधीन और इसी तरह की अन्य बातों के साथ बँधा हुआ है। और तब जब आप मसीह में इसकी परिपूर्णता के बारे में सोचते हैं, जब आप नई वाचा में राज्य को जाने के लिए लेकर आते हैं, तो आप कुछ परिवर्तनों को पाते हैं। स्पष्ट है कि मसीह ही इसका राजा है। वही वह है जो कि पुराने नियम के प्रतीक और परछाई

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

को परिपूर्ण करता है। वही दाऊद और मूसा की भूमिका को परिपूर्ण करता है। और वही एक है जिसने उसके जीवन और मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा राज्य का उदघाटन किया है, इस संसार में परमेश्वर के बचाने वाले शासन को लेकर आता है, और तब एक विश्वव्यापी समुदाय को लेकर आता है—जिसे हम कलीसिया कह कर पुकारते हैं, बिल्कुल एक नया व्यक्ति, जिसमें यहूदी और अन्यजाति इकट्ठे हैं—परिणामस्वरूप वह अब कलीसिया में और इसके द्वारा शासन करता है...यह मसीह का आत्मिक राज्य और शासन उन लोगों के ऊपर है जो कि विश्वास और पश्चाताप के द्वारा उसके पास आने वाले पुरूष और स्त्रियाँ और लड़के और लड़कियाँ हैं। जब वे विश्वास करते हैं, तो वे राज्य में प्रवेश करते हैं। परमेश्वर का बचाने वाला शासन उनमें आ जाता है। यह राज्य अब विश्वव्यापी है जहाँ पर परमेश्वर का राज्य अब ऐसे लोगों को लाता है जो प्रत्येक कुल, राष्ट्र, लोग और भाषा से आए हुए हैं। और यह स्वयं को स्थानीय कलीसिया में प्रदर्शित करता है जहाँ एक तरह से ईशतंत्र है जहाँ पर मसीह स्थानीय कलीसिया में उसके लोगों के ऊपर राज्य करता है, परन्तु अक्षरशः उसी तरीके से नहीं जिस तरीके से इस्राएल के राष्ट्र में पुराने समय में हुआ।

— डॉ. स्टीफन टी. वैलऊम

इस तरह से, जब हम उसके राज्य के लिए परमेश्वर के प्रशासन और कैसे यह परिवर्तित हो सकता है, के बारे में सोचते हैं, तो हम निश्चित ही उसके बारे में एक प्राचीन नौकरशाह के रूप में सोचना नहीं चाहेंगे जो कि एक नए संगठनात्मक चार्ट को बनाने के बारे में सोच रहा हो क्योंकि पहले वाले ने कार्य नहीं किया, इसलिए उसके पास मानो अब "योजना ब" है। ऐसा सामान्य तौर से नहीं हो सकता है। उसके प्रयोजनों को स्थाई बने रहना है। जैसा कि मैं सोचता हूँ कि, ऐसा अनुमान लगाना अच्छा होगा कि उसके क्रियाशील सिद्धान्त अपेक्षाकृत सदृश्य हों और तब यह समझा जाए कि कौन से परिवर्तनों को गठित किया गया है। इस तरह की घटना में, मैं सोचता हूँ कि तथ्य यह है कि यीशु अब और ज्यादा यहाँ पर महत्वपूर्ण नहीं रह जाता है जिसके कारण आत्मा आता है, ताकि कलीसिया न केवल एक दिए हुए स्थान में शारीरिक यीशु के ऊपर सामर्थ्यशाली हो सके बरन् यह यीशु की आत्मा के साथ उसके सन्देश को देने के लिए, उसके मिशन को पूरे संसार में लाने के लिए स्वतंत्र हो। अब, वाचाओं में यही परिवर्तन है जहाँ पर वे पहले शरीर की अधीनता में क्रियाशील थीं परन्तु अब वे आत्मा के द्वारा सामर्थी बनाई गई हैं ताकि पुरानी वाचा का लक्ष्य—परमेश्वर को अपने पूरे हृदय, मन, और प्राण और सामर्थ्य से प्रेम कर, और अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्रेम कर—विश्वासियों को अब ऐसा करने के लिए सामर्थी बनाया गया है।

— डॉ सीएन मैक्डौन्ग

पुराने नियम की वाचाओं और नई वाचा के मध्य ये जैविक विकास हमें नए नियम के धर्मविज्ञान के ऊपर एक तीसरे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण को प्रदान करते हैं। ख्रीष्टकेन्द्रित और उन नीतियों के ऊपर केन्द्रित होने के अतिरिक्त जो कि मसीह के राज्य के त्रि-स्तरीय रूप में खुलने के लिए उपयुक्त हैं, नए नियम का धर्मविज्ञान पुराने नियम के धर्मविज्ञान के ऊपर भी आधारित है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसके मूल में, नए नियम का धर्मविज्ञान एक नया विश्वास नहीं था। इसकी अपेक्षा, नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम की शिक्षाओं को मसीह में परमेश्वर के प्रकाशनों के आलोक में लागू किया। इस लिए ही नया नियम अपेक्षाकृत छोटा है। इसने पुराने नियम की वैधता को स्थाई मान्यता के साथ ग्रहण किया। इसी लिए नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम की ओर हजारों बार आग्रह करके अपने धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के लिए सहायता प्राप्त किया है। इसलिए, जब हम यह कहते हैं कि नए नियम का धर्मविज्ञान नई वाचा का धर्मविज्ञान है, तो हमारे कहने का यह अर्थ नहीं है कि यह किसी तरह से पुराने नियम से अलग है। इसके विपरीत, नए नियम का धर्मविज्ञान पुराने नियम के धर्मविज्ञान के प्रत्येक आयाम अपने में सम्मिलित करता है और इसके ऊपर ही निर्मित होता है।

अभी तक नई वाचा के ऊपर हमारे इस अध्याय में, हमने परमेश्वर के राज्य के प्रशासन के बारे में पता लगाया है। अब हमें इस अध्याय के हमारे दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए जो कि: नई वाचा में परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता है।

पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता

नए नियम के लेखकों ने परमेश्वर और उसकी वाचा के लोगों के मध्य में असँख्य तरीके से पारस्परिक व्यवहार को वर्णित किया है। उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह के साथ ही उसके क्रोध का भी उल्लेख किया है। उन्होंने आज्ञाकारिता की मांग की और अनाज्ञाकारिता के विरूद्ध चेतावनी दी। उन्होंने वर्णन किया कि कैसे परमेश्वर कुछ लोगों को नुक्सान होने से सुरक्षा प्रदान करता है और अन्य को दुख उठाने की बुलाहट देता है। ये और कई अन्य परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य पारस्परिक व्यवहार के प्रति प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संदर्भ कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को उत्पन्न करते हैं। इस विविधता को किस तरह के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों ने आधार प्रदान किया? कैसे नए नियम के लेखक इन सभों के अर्थ को निकालते हैं? कैसे वे दिव्य और मानवीय पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता तक पहुँचते हैं?

एक बार फिर से, हम प्राचीन निकट पूर्वी अधिपति-जागीरदार की सन्धियों की पृष्ठभूमि से आरम्भ करेंगे। सामान्य अर्थों में, इन सन्धियों का ध्यान उच्च और निम्न स्तर के राजाओं के मध्य हुए पारस्परिक व्यवहार के तीन गुणों के ऊपर केन्द्रित है। सबसे पहले, उच्च राजाओं ने सदैव यह दावा किया कि उन्होंने उनके जागीरदारों के प्रति परोपकारिता को दिखाया। दूसरा, उच्च राजाओं ने कई निश्चित तरीकों को निर्धारित किया जिनके द्वारा उनके जागीरदारों को उनके प्रति निष्ठा को प्रमाणित करना था। और तीसरा, उच्च राजाओं ने उन आशीषों और श्रापों का उल्लेख किया जो जागीरदार आज्ञा या अवज्ञा से अपेक्षा कर सकता था। अब, हमें यह कहने की आवश्यकता है कि उच्च राजाओं ने सदैव इन शर्तों को उनकी वाचाओं के संदर्भ में जैसा उन्हें उचित लगा उस रूप में लागू करने के लिए अधिकार को स्वयं के लिए सुरक्षित रखा था। परन्तु सामान्य तौर पर, परोपकारिता, निष्ठा और परिणाम उन मूलभूत सिद्धान्तों के ऊपर आधारित थे जिनके द्वारा सन्धियों के ये सम्बन्ध संचालित थे।

और जैसा कि हम देखने वाले हैं, यही तत्व बाइबल की वाचाओं में दिव्य और मानवीय पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता में भी प्रगट होते हैं। हमें यह ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि, एक सर्वोच्च राजा के रूप में, परमेश्वर ही था जिसने यह निर्धारित किया कि कैसे उसकी वाचाओं की गतिशीलता फलदाई होगी। और उसने उसके अतुलनीय ज्ञान के अनुसार इसे किया है, न कि मानवीय अपेक्षाओं के मापदण्डों के अनुसार। इसी लिए, पवित्रशास्त्र वर्णित करता है कि परमेश्वर का उसके लोगों के साथ पारस्परिक व्यवहार अक्सर मानवीय समझ से परे की बात है। परन्तु व्यवस्थाविवरण 29:29, यशायाह 55:8-9, कुछ भजन संहिता के भजनों में, और अय्यूब की पूरी पुस्तक में, और सभोपदेशक जैसे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रसंग हमें विभिन्न तरीकों से परमेश्वर द्वारा इन वाचाओं की गतिशीलता को सदैव अच्छे और बुद्धिमानी तरीके से लागू किए जाने का स्मरण दिलाती हैं।

हम परमेश्वर और लोगों के मध्य हुए पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता का पता सर्वप्रथम परमेश्वर की उसके लोगों के प्रति दिव्य परोपकारिता के ऊपर ध्यान देने से लगाएंगे। दूसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे बाइबल की वाचायें परमेश्वर के लोगों के लिए निष्ठा की जाँचों को सम्मिलित करती हैं। और तीसरा, हम उन परिणामों और आशीषों को जो आज्ञापालन और अवज्ञा से होते हैं, को सम्बोधित करेंगे। आइए दिव्य परोपकारिता से आरम्भ करें।

दिव्य परोपकारिता

हम दोनों अर्थात् पुराने नियम और नए नियम की वाचाओं में दिव्य परोपकारिता के तत्वों को देखेंगे। आइए सर्वप्रथम हम पुराने नियम की वाचाओं में दिव्य परोपकारिता के ऊपर ध्यान केन्द्रित करें।

पुराना नियम

पुराना नियम बहुतायत से स्पष्ट करता है कि परमेश्वर की परोपकारिता, या दयालुता, दोनों ने ही उसकी वाचाओं के सम्बन्धों को आरम्भ किया और संभाला है। परमेश्वर ने अपनी परोपकारिता को आदम के साथ उसे मूलभूत वाचाओं के ऊपर आधारित हो उसके साथ बाँधी गई वाचा का प्रतिनिधि बनाते हुए दिखाई थी, से आरम्भ होती है। आदम के पाप में पतित होने से पहले, परमेश्वर ने आदम को अदन के बाग को सृजन करने के द्वारा और उसे परमेश्वर के स्वरूप में रच कर इसमें रखने के द्वारा अपनी दयालुता को प्रदान किया। और उसने उस पर अर्थात् हमारे प्रथम माता पिता, आदम और हव्वा पर, उनके पाप में पतित होने के बाद, बचाने वाले अनुग्रह को भी उण्डेल दिया। इसके अतिरिक्त, आदम परमेश्वर के दरबार में सारी मानवता का प्रतिनिधि ठहरा। इसलिए, जिस दयालुता को परमेश्वर ने आदम को दिखाया था, वह वाचा के उन लोगों के ऊपर स्थानान्तरित हो गई, जिनका उसने प्रतिनिधित्व किया था। इस या अन्य तरीके से परमेश्वर निरन्तर उसके सामान्य अनुग्रह को सभी लोगों, जिसमें अविश्वासी भी सम्मिलित हैं, के ऊपर दिखाता है। और जो सच्चे विश्वासी हैं, जैसे हाबिल, शेत और कई अन्य, परमेश्वर उन पर अपने बचाने वाले अनुग्रह को भी दिखाता है।

अपने पूरे जीवनकाल में, नूह ने भी दिव्य परोपकारिता को– दोनों अर्थात् सामान्य अनुग्रह और बचाने वाले अनुग्रह को—परमेश्वर की वाचा के प्रतिनिधि के रूप में वाचा की स्थिरता में प्राप्त किया था। और, जैसा कि आदम की वाचा में हुआ, परमेश्वर की जो दयालुता नूह के प्रति प्रगट की गई थी, वह भी वाचा के उन लोगों को स्थानान्तरित कर दी गई जिनका नूह ने प्रतिनिधित्व किया था: उन सभी मानव प्राणियों का। विभिन्न तरीकों से, परमेश्वर ने उसके सारे लोगों के ऊपर उसके सामान्य अनुग्रह को प्रगट किया है। और सच्चे विश्वासियों के साथ, शेम की वंशावली में, परमेश्वर ने उसके बचाने वाले अनुग्रह को भी प्रदर्शित किया।

अब्राहम ने भी दिव्य परोपकारिता के सामान्य और बचाने वाले अनुग्रह का अनुभव किया जब वह इस्राएल के चुनाव के समय बाँधी गई वाचा में परमेश्वर की वाचा का प्रतिनिधि था। परमेश्वर की अब्राहम को दिखाई गई दयालुता को वाचा के उन लोगों के प्रति भी प्रगट किया गया जिनका उसने प्रतिनिधित्व किया था: अर्थात् इस्राएलियों, और उन अन्यजातियों के प्रति जिन्हें इस्राएल में अपना लिया जाएगा। जैसा उसने उचित देखा, परमेश्वर ने इस वाचा के लोगों के लिए भी सामान्य अनुग्रह को प्रदर्शित किया, जिसमें एसाव जैसे अविश्वासी भी सम्मिलित हैं। परन्तु परमेश्वर ने उसके बचाने वाले अनुग्रह को विश्वासयोग्य पात्रों जैसे याकूब, यूसुफ, और कई अन्यों के ऊपर भी उण्डेला।

जैसा कि मूसा के जीवन की कहानियाँ भी हमें बतलाती हैं कि, परमेश्वर ने उसके सामान्य और बचाने वाले अनुग्रह की दिव्य परोपकारिता को विशेष तरीके से स्वयं मूसा को व्यवस्था की वाचा में वाचा के प्रतिनिधि के रूप में प्रगट किया। और जिस दयालुता को परमेश्वर ने मूसा को दिखाया था, उसे उनके ऊपर स्थानान्तरित कर दिया गया जिनका उसने प्रतिनिधित्व किया था: अर्थात् इस्राएल का राष्ट्र और वे सभी जो इस्राएल में अपनाए जाएंगे। सभी इस्राएलियों ने परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह से लाभ प्राप्त किया, यहाँ तक कि उन्होंने भी जिन्होंने बचाने वाले विश्वास को प्राप्त नहीं किया था। और परमेश्वर कइयों के ऊपर उसके बचाने वाले अनुग्रह को प्रगट किया जो कि इस्राएल में थे और इस्राएल में अपनाए गए थे।

सबसे अन्त में, दाऊद ने सामान्य और बचाने वाले अनुग्रह की दिव्य परोपकारिता को विशेष तरीकों से वाचा के राजपद में परमेश्वर की चुनी हुई वाचा के प्रतिनिधि के रूप में प्राप्त किया। और जिस दयालुता को परमेश्वर ने दाऊद को प्रगट की थी वह उन लोगों के ऊपर भी स्थानान्तरित की गई जिनका उसने प्रतिनिधित्व किया था उसके: राजकीय पुत्र, इस्राएल का राष्ट्र और इस्राएल में अपनाए गए सभी अन्यजातियाँ। परमेश्वर के गूढ़ ज्ञान के अनुसार, उन सभों ने सामान्य अनुग्रह का अनुभव किया, जिसमें इस्राएल के अविश्वासी लोग भी सम्मिलित थे। परन्तु इस्राएल के सच्चे विश्वासियों ने परमेश्वर का बचाने वाला अनुग्रह भी प्राप्त किया।

परमेश्वर की पुराने नियम की वाचाओं के द्वारा उसके लोगों के प्रति परोपकारिता ने परमेश्वर की परोपकारिता के उन तरीकों के मंच को तैयार किया जिसने नई वाचा की गतिशीलता को भी प्रभावित किया।

नई वाचा

सबसे पहले स्थान पर, नया नियम परमेश्वर की परोपकारिता को मसीह के प्रति ध्यानाकर्षित करता है, जो कि नई वाचा का प्रतिनिधि है। हमें इस बात के ऊपर स्पष्ट होना चाहिए, पाप में पतित होने से पहले आदम की तरह, यीशु को परमेश्वर से दया, क्षमा या बचाने वाले अनुग्रह की आवश्यकता नहीं थी। तौभी, मत्ती 3:16-17; मत्ती 12:18; और लूका 3:22 जैसे प्रसंग यह संकेत देते हैं कि उसके राज्य के उदघाटन के दौरान, पिता ने यीशु को उसकी आत्मा से उसकी सेवा करने के लिए सामर्थी होने के लिए अभिषिक्त किया। वास्तव में, रोमियों 8:11 के अनुसार, यह पवित्रआत्मा की सामर्थ्य थी जिसके कारण पिता ने यीशु को मृतकों में से जीवित किया था। इसके अतिरिक्त, भजन संहिता 2:4-6; और प्रेरितों का काम 2:31-33 में, पिता की यीशु के प्रति परोपकारिता ने उसके अधिकार और सामर्थ्य के समकालीन पद के ऊपर और उसके राज्य की निरन्तरता के दौरान ऊँचे पर उठाया। और यह राज्य उस विशेषाधिकार और महिमा की ओर नेतृत्व करेगा जिसे मसीह उसके राज्य के शिरो-बिन्दु के समय प्राप्त करेगा।

दूसरे स्थान पर, नया नियम इस बात की ऊपर भी ध्यान देता है जिसे मसीही धर्मवैज्ञानिक अक्सर "मसीह के साथ एकता" कह कर पुकारते हैं। यह शिक्षा इसे स्पष्ट कर देती है कि परमेश्वर की मसीह के प्रति परोपकारिता कलीसिया को भी प्रभावित करती है, वाचा के उन लोगों को जिनका वह प्रतिनिधित्व करता है।

विश्वासियों की मसीह के साथ एकता द्वि-स्तरीय है। एक तरफ तो, हम "मसीह में" हैं। इसका अर्थ है कि क्योंकि मसीह हमारी वाचा का प्रतिनिधि है, और नई वाचा के लोग परमेश्वर के स्वर्गीय दरबार में मसीह के साथ पहचाने गए हैं। इसलिए, कई तरह से, जो कुछ मसीह के लिए सत्य है इसे उन सबके लिए भी सत्य माना गया है जिनका वह परमेश्वर के दरबार में प्रतिनिधित्व करता है। यही कुछ पौलुस के मन में उस समय था जब उसने इफिसियों 1:13 में ऐसा कहा कि:

> उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है (इफिसियों 1:13)।

परन्तु दूसरी तरफ, नए नियम विश्वासी "मसीह में" हैं के बारे में मात्र इतना ही नहीं बोलता है। यह साथ में "मसीह हम में हैं," के लिए भी बोलता है। अर्थात्, मसीह पवित्रआत्मा के माध्यम से विश्वासियों में इस पृथ्वी के ऊपर उनके दिन-प्रतिदिन के अनुभवों में कार्यरत् और विद्यमान है। सुनिए रोमियों 8:10-11 में क्या लिखा हुआ है:

> यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो वह... तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा (रोमियों 8:10-11)।

जैसा कि यह प्रसंग संकेत देता है, यद्यपि नए नियम के लेखकों ने यह स्वीकार किया है कि कलीसिया स्वर्ग में मसीह के साथ पहचानी गई है, वे यह भी जानते हैं कि नई वाचा का युग अभी अपने शिरो-बिन्दु तक नहीं पहुँचा है। परिणामस्वरूप, नई वाचा का जीवन उस जीवन से भिन्न हो जो तब होगा जब मसीह पुन: वापस आएगा। उदाहरण के लिए, अब परमेश्वर की नई वाचा के लोग निरन्तर पाप में रहते हैं। इसके अतिरिक्त, झूठे विश्वासी—वे जो बचाए हुए विश्वास के बिना हैं—अभी भी सच्चे विश्वासियों के साथ दृश्य कलीसिया में बने हुए हैं। केवल शिरो-बिन्दु के समय ही मसीह का कार्य हममें पूरा होगा।

इसी कारण से, नया नियम यह शिक्षा देता है कि, मसीह के आगमन से पहले, परमेश्वर उसके सामान्य अनुग्रह को दृश्य कलीसिया में सब लोगों के ऊपर प्रगट करता है, जिसमें झूठे विश्वासी भी सम्मिलित हैं। सच्चाई तो यह है कि, यूहन्ना 15:1-6 और इब्रानियों 6:4-6 जैसे प्रसंग यह प्रगट करते हैं कि यद्यपि अविश्वासी अक्सर परमेश्वर की ओर से महान् अस्थाई दया का अनुभव करते हैं, परन्तु वे बचाने वाले अनुग्रह को प्राप्त नहीं करते हैं। परन्तु उसी समय, परमेश्वर ने उसके बचाने वाले अनुग्रह को अभी भी सच्चे विश्वासियों पर प्रगट किया है। इसलिए ही यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, कि क्यों नए नियम के धर्मविज्ञान का प्रत्येक पहलू को दिव्य परोपकारिता के संदर्भ में लिख दिया गया है।

> दोनों अर्थात् पुराने और नए नियम में हम देखते हैं कि प्रभु यह घोषणा करता है वह सारे मानव जाति के प्रति दयालु है, दोनों के प्रति अर्थात् भलों और बुरों के लिए, धर्मी और अधर्मियों के प्रति, उनके प्रति जो उसकी सन्तान है और उनके प्रति जो उसकी सन्तान नहीं हैं। प्रभु इन तरीकों से दयालु है: सर्वप्रथम, हम सभों के पापी होने के बावजूद वह हमें अचानक से नाश नहीं करता है। वह हमें उसके अनुग्रह के द्वारा जीवन व्यतीत करने देता है। दूसरे स्थान पर, वह हमें वर्षा की आशीष देता है, और वर्षा दोनों के खेतों के ऊपर आ गिरती है अर्थात् दुष्टों और धर्मियों के ऊपर। हमें यह भी कहा गया है कि सूर्य पौधों में वृद्धि करता है और धर्मियों और अधर्मियों दोनों को ही जीवन प्रदान करता है। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर उसकी सारी सृष्टि, अर्थात् भली और बुरी दोनों के प्रति दयालु है। और यह कि वह हमें ऐसे सभी अवसर प्रदान करता है कि हम यह स्वीकार कर लें कि वह कौन है। वह हमें इसके बारे में उसकी दया के माध्यम से बताता है, परमेश्वर उन्हें भी जो उसका अनुसरण नहीं करते हैं या यहाँ तक कि उसका इन्कार कर देते हैं, उसके सन्देश को सुनने का, उसके वचन को अध्ययन करने का और बचाये जाने का अवसर प्रदान करता है। इस तरह से प्रभु उन पर भी दयालु है जो उसके अस्तित्व का ही इन्कार कर देते हैं। और जो उसके हैं, उनको वह उनके साथ सदैव रहने की और उन्हें सदैव आशीषित करने की प्रतिज्ञायें देता है।
>
> — डॉ. ऐल्विन पडीला, अनुवादित

जैसा कि पौलुस इफिसियों 2:8 में लिखता है कि:

> क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है—और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है (इफिसियों 2:8)।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता दिव्य परोपकारिता के प्रदर्शन में सम्मिलित है, हमें यह देखना चाहिए कि कैसे परमेश्वर के साथ वाचा में जीवन निष्ठा की जाँचों की मांग करता है। आज्ञाकारिता की ये शर्तें परमेश्वर के साथ बाँधी गई वाचा में उन लोगों के हृदयों के हाल को प्रगट करते हैं।

निष्ठा की जाँचें

हमें यहाँ पर उल्लेख करना चाहिए कि बीसवीं शताब्दी के बहुत से विद्वानों ने बाइबल की वाचाओं की तुलना प्राचीन निकट पूर्वी मूलपाठों के अन्य समूहों के साथ करनी आरम्भ कर दी है, जिसे अक्सर "राजकीय अनुदान" कह कर पुकारा जाता है। इन अनुदानों में, एक अधिपति एक जागीरदार या उसके अधीनस्थ को कई लाभों का अनुदान प्रदान करता था। आरम्भिक अनुसंधान ने कइयों को यह सार निकालने में नेतृत्व दिया कि वहाँ पर उस व्यक्ति के लिए जिसने अनुदान को प्राप्त किया था, कोई दायित्व या शर्तें नहीं थीं, निष्ठा की कोई जाँच नहीं थी। और, इसके परिणामस्वरूप, बाइबल के कई व्याख्याकारों ने यह सुझाव दिया है कि बाइबल की कुछ वाचायें परमेश्वर के लोगों के लिए निष्ठा की मांग नहीं करती हैं। परन्तु, अधिक समकालीन अनुसंधान ने इसकी विरोधी दिशा की ओर संकेत किया है। हम अब जानते हैं कि यहाँ तक कि राजकीय अनुदानों में उसके प्राप्तकर्ताओं से राजकीय सेवकाई की मांग की जाती थी। इसलिए, हमें आश्चर्य में नहीं पड़ना चाहिए जब पवित्रशास्त्र हमें यह बताता है कि परमेश्वर ने उसके लोगों की निष्ठा की बाइबल की प्रत्येक वाचा में जाँच की, जिसमें नई वाचा भी सम्मिलित है।

जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर नई वाचा में जीवन के हिस्से के रूप में हमारी निष्ठा की जाँच करता है, तो हमें कुछ गंभीर गलत धारणाओं से बचने की आवश्यकता है। सर्वप्रथम, सम्पूर्ण बाइबल में, किसी भी पापी ने कभी भी भले कार्यों के द्वारा उद्धार को प्राप्त नहीं किया है। हम कभी भी उस सिद्धता तक हमारे स्वयं के प्रयासों के माध्यम से नहीं पहुँच पाएंगे जो परमेश्वर की अनन्तकालीन आशीषों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। दूसरा, वह हर भला कार्य जिसे हम करते हैं हममें कार्यरत् परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा सम्भव किया जाता है। हम परमेश्वर की दया और उसके आत्मा की सामर्थ्य से अलग होकर किसी भी भले कार्य को पूरा नहीं कर सकते हैं। और तीसरा, हमें अभी भी स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर ने सदैव उसकी वाचा के लोगों को आज्ञाकारिता के लिए बुलाया है। दोनों अर्थात् पुराने और नए नियम में, परमेश्वर ने उसके लोगों के हृदयों की जाँच की या उनकी सच्ची हालत को प्रमाणित उसकी आज्ञाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से किया।

> मैं जो चाहता हूँ वह यह है कि मसीह में सारे विश्वासियों को यह जानना चाहिए कि परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत् सम्बन्ध नए नियम में ही आरम्भ नहीं होता है। यह एक लम्बे समय से चलने वाली प्रक्रिया "मैं उनका परमेश्वर हूँगा और वे मेरे लोग होंगे," की पूर्णता है। यह सूत्र बिल्कुल आरम्भ से मिलता है, आप जानते हैं, यह अदन के बाग से, उत्पत्ति 12 से है, जहाँ पर लोगों को वाचा के लोग बनाया गया। और इस तरह से, आन्तरिक भक्ति आज्ञाकारिता की उत्पत्ति है। यह आज्ञाकारिता का परिणाम नहीं है। यह आज्ञाकारिता से अलग नहीं है...हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन इसलिए करते हैं क्योंकि उसने हमसे प्रेम किया है, क्योंकि उसने हमें कार्य में सम्मिलित किया है, क्योंकि उसने हमें सृजा है, क्योंकि वह हमारे साथ

> प्रत्येक घाटी, प्रत्येक जंगल, प्रत्येक विजय में बना हुआ है। और इसलिए, आज्ञाकारिता एक सम्बन्ध का परिणाम है और न कि किसी नियम का परिणाम।
>
> — डॉ. जोएल सी. हन्टर

जो कुछ हमने कहा है उसे देखने के लिए, हम निष्ठा की जाँचों को जो कि पुराने नियम की वाचाओं में प्रगट होती हैं सारांशित करेंगे। तब हम नए नियम की वाचा में निष्ठा की जाँचों को देखेंगे। आइए पुराने नियम के साथ आरम्भ करें।

पुराना नियम

बाइबल से परिचित प्रत्येक वह व्यक्ति यह जानता है कि परमेश्वर ने आदम को परमेश्वर की वाचा के प्रतिनिधि के रूप में जाँच अदन के बाग के लिए दिशासूचकों को देने के माध्यम से की। और हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर ने आदम में: अर्थात् पूरी मानव जाति के लोगों को उसकी वाचा के प्रति निष्ठा की बुलाहट दी।

नूह को भी परमेश्वर ने उसकी वाचा के प्रतिनिधि होने के नाते दोनों अर्थात् बाढ़ के आने से पहले और बाद में दिशासूचकों के माध्यम से जाँच की। और पवित्रशास्त्र संकेत देता है कि परमेश्वर निरन्तर नूह में उसकी वाचा के लोगों के हृदयों की जाँच करता है—अर्थात् एक बार फिर, पूरी मानव जाति का।

अब्राहम के जीवन की कहानियाँ ये उदाहरण देती हैं कि कैसे परमेश्वर ने कुलपति की निष्ठा को कई तरीकों से उसकी वाचा का प्रतिनिधि होने के नाते जाँच की। केवल एक उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 22:1-9 हमें स्पष्ट बताता है कि परमेश्वर ने अब्राहम की तब जाँच की जब उसने उसे उसके पुत्र इसहाक को बलिदान चढ़ाने की आज्ञा दी। उत्पत्ति 22:12 में, अब्राहम को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने यह कहा कि:

> इस से मै अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है, क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन् एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा (उत्पत्ति 22:12)।

हम इस प्रसंग में देख सकते हैं कि क्यों परमेश्वर ने अब्राहम को आज्ञा दी। उसने उसकी जाँच इसलिए की कि वह उसके हृदय की सच्ची हालत को प्रमाणित करे।

इसी तरह से, पवित्रशास्त्र हमें शिक्षा देता है कि परमेश्वर ने अब्राहम में उसकी वाचा के लोगों से उनकी निष्ठा की जाँच की: जो कि इस्राएल के लोग थे और इस्राएल में अन्यजातियों से अपनाए गए थे।

मूसा की भी जाँच उसके पूरे जीवन भर में इस्राएल के लिए उसकी वाचा के प्रतिनिधि होने के नाते परमेश्वर की आज्ञाओं के ऊपर की गई थी। और परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से वर्णित किया था कि उसने इस्राएलीयों उसकी वाचा के लोगों को व्यवस्था जाँच करने के लिए दी थी। सुनिए व्यवस्थाविवरण 8:2 में मूसा ने लोगों को ऐसे कहा कि:

> तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा वा नहीं (व्यवस्थाविवरण 8:2)।

बहुत कुछ इसी तरह से, दाऊद के जीवन की कहानियाँ संकेत देती हैं कि परमेश्वर ने दाऊद की निष्ठा को इस्राएल के साथ बाँधी गई राजकीय वाचा के प्रतिनिधि के नाते जाँच की। और बाकी का पुराना नियम बारी बारी दुहराते हुए प्रदर्शित करता है कि, परमेश्वर निरन्तर उसकी वाचा के लोगों की, दाऊद के पुत्रों की और इस्राएल के राष्ट्र की उनकी पूरी पीढ़ियों में जाँच करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुराने नियम की वाचाओं में निष्ठा के लिए परमेश्वर की जाँच का उल्लेख कर लेने के बाद, आइए अब हम उन तरीकों का पता लगायें जिनमें परमेश्वर ने नई वाचा में उसके लोगों की निष्ठा की जाँच की।

नई वाचा

अब, जैसा कि हमने देख लिया है कि, परमेश्वर का अनुग्रह इस तरह से नई वाचा में उण्डेला गया जैसा कि पहले कभी भी बाइबल के इतिहास में नहीं हुआ है। तौभी, यह प्रगट है कि नए नियम में परमेश्वर की ओर से असँख्य आज्ञायें और दिशासूचक हैं। ऐसा सत्य क्यों है? ठीक है, जैसा कि पुराने नियम की वाचाओं में हुआ, नई वाचा भी निष्ठा की जाँचों की मांग करती है।

इसी कारण, नया नियम नई वाचा के प्रतिनिधि के रूप में मसीह की निष्ठा के प्रति बहुत ज्यादा ध्यान केन्द्रित करती है। यह हमें बताता है कि राज्य के उदघाटन के मध्य, यीशु ने निष्ठा की प्रत्येक जाँच को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण किया जिसकी उससे परमेश्वर ने मांग की थी। इब्रानियों 4:15 में हम पढ़ते हैं कि:

> हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला (इब्रानियों 4:15)।

फिलिप्पियों 2:8 को सुनिए, जहाँ पर पौलुस मसीह की उल्लेखनीय आज्ञाकारिता की ओर संकेत देता है :

> और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु—हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली! (फिलिप्पियों 2:8)।

नए नियम के धर्मविज्ञान में, यीशु की परमेश्वर के प्रति की गई निष्ठापूर्वक राजकीय सेवा का चरम उसकी क्रूस के ऊपर स्वैच्छा से दी गई मृत्यु में मिलता है। परन्तु क्यों आज्ञाकारिता का यह कार्य अत्यन्त महत्व रखता है?

पाप के संसार में प्रवेश होने के बाद से, परमेश्वर ने उसकी वाचा के लोगों के पापों के लिए पशुओं के बलिदानों के माध्यम से अस्थाई छुटकारे का प्रबन्ध किया था। परन्तु जैसा कि इब्रानियों 10:1-14 हमें शिक्षा देता है कि, ये बलिदान परमेश्वर के विजयी राज्य की अन्तिम, स्थाई क्षमा को प्राप्त करने में असमर्थ थे। और इसलिए, जब इस्राएल का निर्वासन में जाने का समय आया, तब परमेश्वर ने यशायाह 53:1-12 में प्रकाशित किया कि, उसे प्रभु के सेवक, मसीह की, उसके लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए स्वैच्छा से चढ़ाई गई मृत्यु की आवश्यकता है। उसकी मृत्यु के माध्यम से, राजकीय वाचा का प्रतिनिधि परमेश्वर के लोगों को उसके अनन्तकाल के विजयी राज्य की महिमा में लेकर आएगा। यीशु ने इस भूमिका को उदघाटन के समय पूरा किया जब उसने क्रूस की मृत्यु के लिए स्वयं को स्वैच्छा से अधीन कर दिया। हम मत्ती 8:17; प्रेरितों के काम 8:32-33; रोमियों 6:10; और 1 पतरस 2:22-25 जैसे प्रसंगों में इसे देखते हैं। नई वाचा के प्रतिनिधि होने के नाते निष्ठा की इस जाँच में से उत्तीर्ण होने के बाद, यीशु ने उन सभों के लिए स्थाई प्रायश्चित और अनन्तकालीन क्षमा का प्रबन्ध किया है जो उसके ऊपर विश्वास करते हैं।

यीशु की क्रूस के ऊपर मृत्यु के अतिरिक्त, इब्रानियों 8:1-2 जैसे प्रसंग यह भी संकेत देते हैं कि मसीह, दाऊद का पुत्र होने के नाते, उसके राज्य की पूरी निरन्तरता में स्वर्ग में आज्ञाकारिता के साथ सेवा करता है। और 1 कुरिन्थियों 15:24 हमें शिक्षा देता है कि जब मसीह शिरो-बिन्दु के समय उसकी महिमा में पुनः वापस आएगा, तो वह इस राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सुपुर्द एक नम्र सेवा के कार्य के रूप में कर देगा।

अब नए नियम का धर्मविज्ञान यह जितना ज्यादा मसीह की सिद्ध निष्ठा के ऊपर नई वाचा के प्रतिनिधि के रूप में जोर देता है, उतना ही ज्यादा यह इस बात पर भी जोर देता है कि निष्ठा की जाँच अभी भी कलीसिया के लिए कार्यरत् हैं, जो कि नई वाचा के लोग हैं।

एक बार फिर से, यह कलीसिया के लिए निष्ठा की जाँचों को समझने में सहायता कलीसिया के मसीह के साथ एकता के संदर्भ में प्रदान करता है। एक तरफ तो, कलीसिया "मसीह में" इस अर्थ में है कि हम उसके स्वर्गीय दरबार में परमेश्वर के आगे उसके साथ पहचान में आए हुए हैं। और 1 तीमुथियुस 3:16 के अनुसार, मसीह ही वह है जिसने निष्ठा की जाँच को पूर्णता के साथ उत्तीर्ण किया है और उसे उँचे पर चढ़ाया गया जब पवित्रआत्मा ने उसे मृतकों में से जीवित किया। इसी कारण से, रोमियों 4:23-25 जैसे प्रसंग यह शिक्षा देते हैं कि, मसीह का स्वर्ग के दरबार में इस तरह से वैधानिक रूप में उँचे पर उठाया जाना उन सभों में अध्यारोपित कर दिया गया है जिनके पास उसमें बचाए जाने वाला विश्वास है। मसीह में, सच्चे विश्वासियों का न्याय जाँच में उत्तीर्ण हुए लोगों की नाईं होता है क्योंकि मसीह ने हमारे बदले में जाँच को उत्तीर्ण कर लिया है। परमेश्वर के स्वर्गीय दरबार में मसीह के बारे में यह आश्चर्यजनक सत्य नए नियम के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण का आधार है जिसे प्रोटेस्टेन्ट धर्मवैज्ञानिकों ने "सोला फिडा," या विश्वास के माध्यम से ही धर्मी ठहराया जाना कहकर पुकारा है।

तथापि, एक तरफ, मसीह के साथ एकता "मसीह हम में," के दिन-प्रतिदिन के अनुभव की ओर भी संकेत देती है। जबकि कलीसिया अभी भी मसीह के उसके महिमा सहित आगमन से पहले इस पृथ्वी में अस्तित्व में है, लोग कलीसिया में निष्ठा की जाँच का अनुभव करते हैं जो उनके हृदयों के हालातों को प्रमाणित करती हैं। और मसीह का आत्मा सच्चे विश्वासियों में उन्हें पवित्र बनाने में कार्यरत् है। मसीह के साथ हमारी एकता यह पहलू पवित्रीकरण के पारम्परिक प्रोटेस्टेन्ट सिद्धान्त, या पवित्रता का प्रगतिशील अनुसरण के सदृश्य है। और पवित्रशास्त्र यह शिक्षा देता है कि जाँच वह तरीका है जिसमें परमेश्वर हमें पवित्रीकरण के लिए आगे बढ़ाता है। जैसा कि याकूब 1:2-3 में लिखा हुआ है कि:

> हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है (याकूब 1:2-3)।

अब, एक बार फिर से, हमें स्मरण रखना चाहिए कि मसीह के राज्य के उदघाटन और निरन्तरता के मध्य, दृश्य कलीसिया, दोनों अर्थात् झूठे विश्वासियों और सच्चे विश्वासियों से मिलकर बनी हुई है। और निष्ठा की जाँच के माध्यम से दोनों समूहों में प्रगट होगा कि उनके पास बचाने वाला विश्वास है या नहीं। झूठे विश्वासी निष्ठा की जाँच में विफल और मसीह की सेवा करने से दूर हो जाएंगे। इसकी अपेक्षा, सच्चे विश्वासी, यद्यपि इस जीवन में सिद्ध नहीं हैं, परन्तु फिर भी मसीह के प्रति अपनी निष्ठा में धीरज के साथ आत्मा की सामर्थ्य के माध्यम से बने रहेंगे। जैसा कि हम 1 यूहन्ना 2:19 में झूठे विश्वासियों के सम्बन्ध में पढ़ते हैं कि:

> वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं; क्योंकि यदि हम में के होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल इसलिये गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं (1 यूहन्ना 2:19)।

जैसा कि यह प्रसंग संकेत देता है, नए नियम में धर्मविज्ञान परमेश्वर की बहुत सी आज्ञाओं में हैं जो कि निष्ठा की जाँचों को प्रमाणित करने के लिए उनके लिए दिए गए हैं जो वास्तव में सच्चे विश्वासियों की देह से सम्बन्धित हैं।

> जिस रात उसके साथ विश्वासघात किया गया, यीशु मसीह ने एक नई वाचा का शुभारम्भ किया। और अन्य वाचाओं की तरह ही, यह ऐसी है जिसमें पारस्परिक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> समर्पण और पारस्परिक दायित्व सम्मिलित हैं। और इस अद्‌भुत वाचा में समर्पणों में से एक मुख्य समर्पण यीशु मसीह के प्रभुत्व के प्रति, उसकी इच्छा और उसके रास्तों के प्रति आज्ञाकारिता का है, हमारी तलवार को उसके सच्चे प्रभुत्व के प्रति आत्मसमर्पण कर देने का, और इन्हें प्रामाणिक तरीकों से जीवन यापन करने का, दोनों तरीकों से अर्थात् हमारे हृदयों के प्रतिस्थापन में और इस संसार में परमेश्वर के हृदय का अनुसरण करने के प्रति हमारी इच्छा में का है। परन्तु कई बातों में से एक बात जिसे निश्चित ही यहाँ पर जोड़ना चाहिए कि आज वाचा के प्रति दायित्वों की पूर्णता ऐसी पूर्णतायें हैं जिन्हें हम पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ्य से जीवन यापन करते हैं। और पवित्र आत्मा उस आज्ञाकारिता के प्रतिस्थापन के प्रति हमें सचेत करता और सम्पूर्ण कर्तव्य को अद्यतन करता है ताकि यह पवित्रशास्त्र की भाषा बन जाए, इस तरह से यह वाचा पारस्परिक हर्ष की एक वाचा बन जाती है। वह जो हमें ऊपर से देखता हममें हर्षित होता है और हम उसमें होते हैं। और यह हमें कुछ विचार देता है कि क्यों प्रेरित यह कह सका कि परमेश्वर का राज्य केवल सम्पूर्ण कर्तव्य ही नहीं है, अपितु पवित्र आत्मा में धार्मिकता, और शान्ति और आनन्द है। कुछ महान् सन्तों ने हमें यह कहा है कि यह कर्तव्य जो विश्वासयोग्य लोगों और हमारे प्रभु के प्रति निष्ठावानों के लिए अस्तित्व में है, ऐसा है जिसे हम अनिच्छा से पूरा नहीं करते हैं, अपितु विस्तृत रूप में, हमारे सम्पूर्ण हृदय से पूरा करते हैं क्योंकि उसने हमें जीत लिया है। और हमें वह और उसके तरीके रमणीय लगते हैं।
>
> — डॉ ग्लीन जी. सक्रोजी

अब क्योंकि हमने नई वाचा में पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता को परमेश्वर की दिव्य परोपकारिता और निष्ठा की जाँचों में देख लिया है, हमें अब तीसरे तत्व की ओर मुड़ना चाहिए। आइए हम अब आज्ञाकारिता और अवज्ञा के परिणामस्वरूप निकलने वाली आशीषों और श्रापों की जाँच करें।

परिणाम

हम वाचा में परमेश्वर के साथ हमारे पहले के विचार-विमर्शों पर आधारित होकर आज्ञाकारिता और अवज्ञा के परिणामों को देखेंगे। हम संक्षेप में पुराने नियम की वाचाओं का सर्वेक्षण करेंगे और तब हम नई वाचा की ओर मुड़ेंगे। आइए सर्वप्रथम हम पुराने नियम की वाचाओं के आशीषों और श्रापों के परिणामों को देखें।

पुराना नियम

नई वाचा के आने से पहले, आशीष और श्राप दोनों के परिणाम का परमेश्वर की उसके वाचा के प्रतिनिधियों के पारस्परिक व्यवहारों के, और पूर्ण रूप में उसकी वाचा के लोगों के सम्बन्धों के महत्वपूर्ण आयामों में थे। अब, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है कि, परमेश्वर ने अक्सर उसकी वाचा की शर्तों को इस तरीकों से कार्यान्वित किया कि वह मानवीय समझ से परे थी। इसलिए, पवित्रशास्त्र में अक्सर उसकी वाचा की आशीषों और श्रापों के लिए जल्दबाजी की, देरी की, इनके प्रभावों को कम कर दिया और यहाँ तक कि उसने वाचाओं की आशीषों और श्रापों को कई बार इस तरह से निरन्तर कर दिया जो कि मानवीय समझ से परे थी। परन्तु उसने सदैव ऐसा उसकी सिद्ध ज्ञान और भलाई के अनुसार किया।

नींव की वाचा में, परमेश्वर ने आदम को, जो कि उसकी वाचा का प्रतिनिधि था, उसकी अनाज्ञाकारिता की प्रतिक्रिया में दु:ख और मृत्यु के साथ श्रापित ठहराया। परन्तु, हम साथ ही आदम के ऊपर परमेश्वर की आशीषों को भी देखते हैं। उत्पत्ति 3:15 में, परमेश्वर ने मानवता को सर्प के बीज के ऊपर विजयी होने की प्रतिज्ञा दी। और दोनों अर्थात् मृत्यु का श्राप और आशा की विजय को वाचा के उन लोगों तक जिनका आदम ने प्रतिनिधित्व किया, अर्थात् मानव जाति के ऊपर, जैसा परमेश्वर को उचित लगा, पारित कर दिया।

प्रकृति की स्थिरता की वाचा में, वाचा के प्रतिनिधि, नूह ने उसकी विश्वासयोग्य सेवकाई के लिए आशीषों को प्राप्त किया। परन्तु उसने साथ ही निरन्तर श्रापों का भी सामना किया, जैसे कि बाढ़ के बाद उसके परिवार में परेशानियों का आना। इसी तरह की आशीषें और श्राप मानव जाति की भविष्य की पीढ़ियों में आए, वाचा के उन लोगों के ऊपर जिनका नूह ने प्रतिनिधित्व किया था।

इस्राएल के चुनाव की वाचा में, अब्राहम ने परमेश्वर की वाचा के प्रतिनिधि के रूप में आशीषों और श्रापों के परिणामों को प्राप्त किया। ये परिणाम इस्राएल की वाचा के आने वाली पीढ़ियों के लोगों तक और इस्राएल में अपनाए गए लोगों तक पारित कर दिए गए थे।

इसी तरह से, व्यवस्था की वाचा में, मूसा ने परमेश्वर की आशीषों और श्रापों को उसके जीवन में वाचा का प्रतिनिधि होने के नाते प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त, मूसा की व्यवस्था ने कई विशिष्ट आशीषों और श्रापों को लिख दिया जो कि इस्राएल में वाचा के लोगों और इस्राएल में अपनाए गए अन्यजातियों के लोगों के ऊपर आएंगे।

राजपद की वाचा में, स्वयं दाऊद ने, वाचा का प्रतिनिधि होने के नाते, आशीषों और श्रापों के परिणामों को उसकी विश्वासयोग्यता और अविश्वासयोग्यता के ऊपर प्राप्त किया। ऐसा ही सत्य वाचा के उन लोगों के लिए था जिनका उसने प्रतिनिधित्व किया, अर्थात् उसके राजकीय वंशजों और इस्राएल के लोगों और इस्राएल में अपनाए गए अन्यजातियों के लोगों के साथ है।

हमने संक्षेप में पुराने नियम की वाचाओं की आशीषों और श्रापों के परिणामों को स्पर्श किया है। ये नए नियम के लेखकों के लिए मसीह में नई वाचा के साथ सम्बद्ध लोगों की आज्ञाकारिता और अवज्ञा के परिणामों की शिक्षा के मंच को तैयार कर देती हैं।

नई वाचा

नए नियम का धर्मविज्ञान जोर देता है कि मसीह ने, नई वाचा का प्रतिनिधि होने के नाते, दोनों अर्थात् परमेश्वर के श्रापों और परमेश्वर की आशीषों का अनुभव किया। जैसा कि पौलुस ने गलातियों 3:13 में उल्लेख किया है, यीशु ने उन सभों के पापों के लिए जो उसमें विश्वास करते हैं, परमेश्वर के श्राप को सहन किया, जब उसने क्रूस के ऊपर मृत्यु से दु:ख को सहा।

अब, यीशु परमेश्वर के श्राप के अधीन उसकी स्वयं की व्यक्तिगत् असफलताओं के कारण नहीं आया था। परन्तु यशायाह 53:1-12 की परिपूर्णता में, उसने प्रत्येक युग में परमेश्वर के लोगों के लिए एक निर्दोष राजकीय विकल्प होने के नाते परमेश्वर के न्याय को सहन कर लिया। तथापि, इसके विपरीत, उसकी स्वयं की व्यक्तिगत् धार्मिकता के कारण, मसीह ने परमेश्वर की आशीषों को भी प्राप्त किया। यीशु केवल एकलौता ऐसा मानवीय प्राणी है जिसने परमेश्वर की सेवा सिद्ध रूप से की और परमेश्वर की अनन्तकाल की आशीषों के लिए परमेश्वर के ईनाम का हक्कदार है।

सुनिए फिलिप्पियों 2:8-9 में मसीह की आज्ञाकारिता का और परमेश्वर की आशीष के मध्य के सम्बन्ध को:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> [मसीह ने] यहाँ तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है (फिलिप्पियों 2:8-9)।

नए नियम के धर्मविज्ञान में, यीशु का पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण राज्य के उदघाटन के समय परमेश्वर के प्रति उसकी सिद्ध आज्ञाकारिता के उचित ईनाम थे। यीशु परमेश्वर की आशीष का राज्य की पूरी निरन्तरता में आनन्द प्राप्त करता है जब वह पिता के दाहिने हाथ बैठ उसकी सारी सृष्टि के ऊपर राज्य करता है। और वह उसके राज्य के शिरो-बिन्दु के समय और भी ज्यादा आशीष को प्राप्त करता है जब वह नई सृष्टि के ऊपर शासन करते हुए अनन्तकालीन उत्तराधिकार को प्राप्त करता है।

अब, जितना ज्यादा नए नियम का धर्मविज्ञान यीशु की प्रशंसा उसकी सारी सृष्टि के ऊपर शासन करने की आशीष के लिए करता है, इससे हम जानते हैं कि नई वाचा के परिणामों का कलीसिया के ऊपर भी प्रभाव है, जो कि नई वाचा के लोग हैं।

एक बार फिर से, नए नियम का मसीह के साथ एकता का सिद्धान्त इस वास्तविकता के दो पहलुओं की ओर संकेत करता है। एक तरफ तो, क्योंकि हम "मसीह में" है, इसलिए परमेश्वर की प्रत्येक आशीष पहले से ही सच्चे विश्वासियों के लिए निर्धारित कर दी गई हैं। सच्चे विश्वासी पूर्ण भरोसे के साथ इस तथ्य के ऊपर आधारित हो सकते हैं कि वे कभी भी परमेश्वर के अनन्तकालीन श्राप का अनुभव नहीं करेंगे। उनकी अनन्तकालीन आशीषें सुरक्षित कर दी गई हैं क्योंकि मसीह उनकी वाचा का प्रतिनिधि है।

पौलुस ने जब इफिसियों 1:3 में अपने जाने-पहचाने महिमागान को लिखा तब उसके मन में यही अवधारणा थी कि:

> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी हैं (इफिसियों 1:3)।

क्योंकि हम स्वर्ग में मसीह के साथ परिचित किए गए हैं, इसलिए सच्चे विश्वासियों ने पहले से "सब प्रकार की आशीषों" को प्राप्त कर लिया है। बिल्कुल वैसे ही जैसे मसीह ने हमारे बदले में परमेश्वर के अनन्तकालीन श्राप को सहन कर लिया, उसने साथ ही हमारे बदले में पिता से अनन्तकालीन आशीषों के ईनाम को भी प्राप्त किया है।

तथापि, दूसरी तरफ, मसीह के साथ हमारी एकता का अर्थ यह है कि मसीह हम में है। ऐसा कहने से हमारा तात्पर्य यह है कि, वह सच्चे विश्वासियों में कार्यरत् है ताकि वह अपने प्रतिदिन के जीवन में आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणामों का अनुभव करें।

अब, एक बार फिर से, हमें स्मरण रखना चाहिए कि जब तक मसीह अपनी महिमा में पुन: वापस नहीं आता, दृश्य कलीसिया दोनों अर्थात् झूठे विश्वासियों और सच्चे विश्वासियों से मिलकर बनी है। और नए नियम का धर्मविज्ञान यह व्याख्या करता है कि कैसे इस जीवन और अनन्तकाल में आशीषों और श्रापों के परिणामों इन दोनों समूहों के ऊपर कार्यान्वित होती हैं।

लूका 12:45-46 और रोमियों 2:4-6 जैसे प्रसंग यह वर्णित करते हैं कि, झूठे विश्वासी जो निरन्तर परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते हैं, जिन आशीषों को वे इस जीवन में प्राप्त करते हैं, वे उनके विरूद्ध परमेश्वर के अनन्तकालीन श्रापों को अन्तिम न्याय के समय वृद्धि कर देगीं। और जिन कठिनाइयों और श्रापों को वे इस जीवन में सहन करते हैं वह कुछ नहीं अपितु अनन्तकालीन श्रापों का पूर्वस्वादन् है जिन्हें वे उस समय प्राप्त करेंगे जब मसीह का पुनः आगमन होगा।

इसके विपरीत, सच्चे विश्वासी दोनों अर्थात् इस जीवन में आशीषों और श्रापों को भी प्राप्त करेंगे। परन्तु वे आशीषें जिन्हें विश्वासी इस जीवन में प्राप्त करेंगे वह अनन्तकालीन आशीषों का पूर्वस्वादन् है जो कि राज्य के शिरो-बिन्दु के समय आएगीं। और सच्चे विश्वासियों के लिए, इब्रानियों 12:1-11 जैसे प्रसंग हमें

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बताते हैं कि, अस्थाई कठिनाइयाँ, या श्राप, परमेश्वर का प्रेमभरा, पैतृक अनुशासन हैं। ये कठिनाइयाँ हमें पवित्र करती हैं और अनन्तकाल की आशीषों में वृद्धि करती हैं, जिन्हें हम तब प्राप्त करेंगे जब मसीह का पुनः आगमन होगा। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 21:6-8 में पढ़ते हैं, जहाँ परमेश्वर ऐसे कहता है कि:

> मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊँगा। जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा। परन्तु डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग—उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है (प्रकाशितवाक्य 21:6-8)।

उस दिन, नई वाचा की कलीसिया में झूठे विश्वासियों को अनन्तकाल के न्याय के लिए दोषी ठहराया जाएगा। परन्तु सच्चे विश्वासी महिमामयी नई सृष्टि में उनके अनन्तकालीन उत्तराधिकार को प्राप्त करेंगे।

> यदि हम उस आशीष को देखना चाहते हैं जिसे अन्तिम न्याय के बाद परमेश्वर के लोग प्राप्त करेंगे, तो हमें प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में जाना चाहिए, यहाँ पर संसार की नई सृष्टि का अद्‌भुत स्वरूप दिया गया है। और मैं प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में वर्णित इस नई सृष्टि के विवरण को पसन्द करता हूँ, क्योंकि यह न केवल उत्पत्ति, में दिए हुए अदन के बाग, का सार है, यह अदन के बाग का पुनः वापस आना नहीं है। यह वास्तव में बाग की वृद्धि का एक स्तर है। यह गतिशीलता है। यह अदन से अति उत्तम है। इस तरह से, अदन में, आदम और हव्वा के पास परमेश्वर की अधीनता में इसके ऊपर शासन करने का, अदन की देखभाल करने का, और पृथ्वी के भण्डारीपन का दायित्व था। नई सृष्टि में हमारे साथ भी ऐसा ही होगा, और यह हमारी आशीष होगी। परन्तु हम कभी पाप नहीं करेंगे। आदम और हव्वा के पास पाप करने की संभावना थी। नई सृष्टि में, परमेश्वर के लोग फिर कभी दुबारा पतन में नहीं गिरेंगे। अदन में, यीशु वहाँ पर नहीं था, वह वहाँ पर भौतिक, शारीरिक रूप से नहीं था। नई सृष्टि में यीशु वहाँ पर होगा। इसलिए, परमेश्वर के लोग होने के नाते आशीषों को हम मीरास में प्राप्त करेंगे, नई वाचा के लोग वास्तव में नई सृष्टि हैं जो कि संसार की किसी भी कभी भी जानी गई से अति उत्तम है।
>
> — डॉ स्टीफन ई. विट्मेर

उपसंहार

मसीह में नई वाचा के ऊपर हमारे इस अध्याय में, हमने परमेश्वर के राज्य के प्रशासन के ऊपर ध्यान दिया और यह देखा कि परमेश्वर उसके राज्य को उसकी वाचा के प्रतिनिधियों के द्वारा प्रशासित करता है, और यह कि कैसे जैविक अर्थात् सचेत रूप से विकसित होती हुई उसकी वाचाओं के रूप में उपयुक्त नीतियों को स्थापित करता है। हमने यह भी पता लगाया कि कैसे परमेश्वर और उसकी वाचा के

लोगों के मध्य में पारस्परिक व्यवहार की गतिशीलता में उसकी दिव्य परोपकारिता, उसकी निष्ठा की जाँचें, और आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणाम सम्मिलित हैं।

जब हम नए नियम को और अधिक अच्छी तरह से समझने की कोशिश करते हैं, तो हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि मसीह में नई वाचा नए नियम के धर्मविज्ञान का एक छोटा सा हिस्सा नहीं थी, नई वाचा ने नए नियम के लेखकों द्वारा लिखे हुए सब कुछ को गहनता से प्रभावित किया। परमेश्वर ने मसीह में उसके लोगों के साथ नई वाचा के माध्यम से एक गंभीर समझौते को किया। और जितना ज्यादा हम इस नई वाचा के बारे में समझेंगे, उतना ज्यादा ही हम नए नियम के धर्मविज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण गुणों को देखने में सक्षम होते जाएंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।